मूल्य रु।. ५-०० मासिक

श्री स्वामिनारायण

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महीने की ११ तारीख • सलंग अंक ११९ • मार्च-२०१७

श्री नरनारायणदेव का १९५ वाँ पाटोत्सव

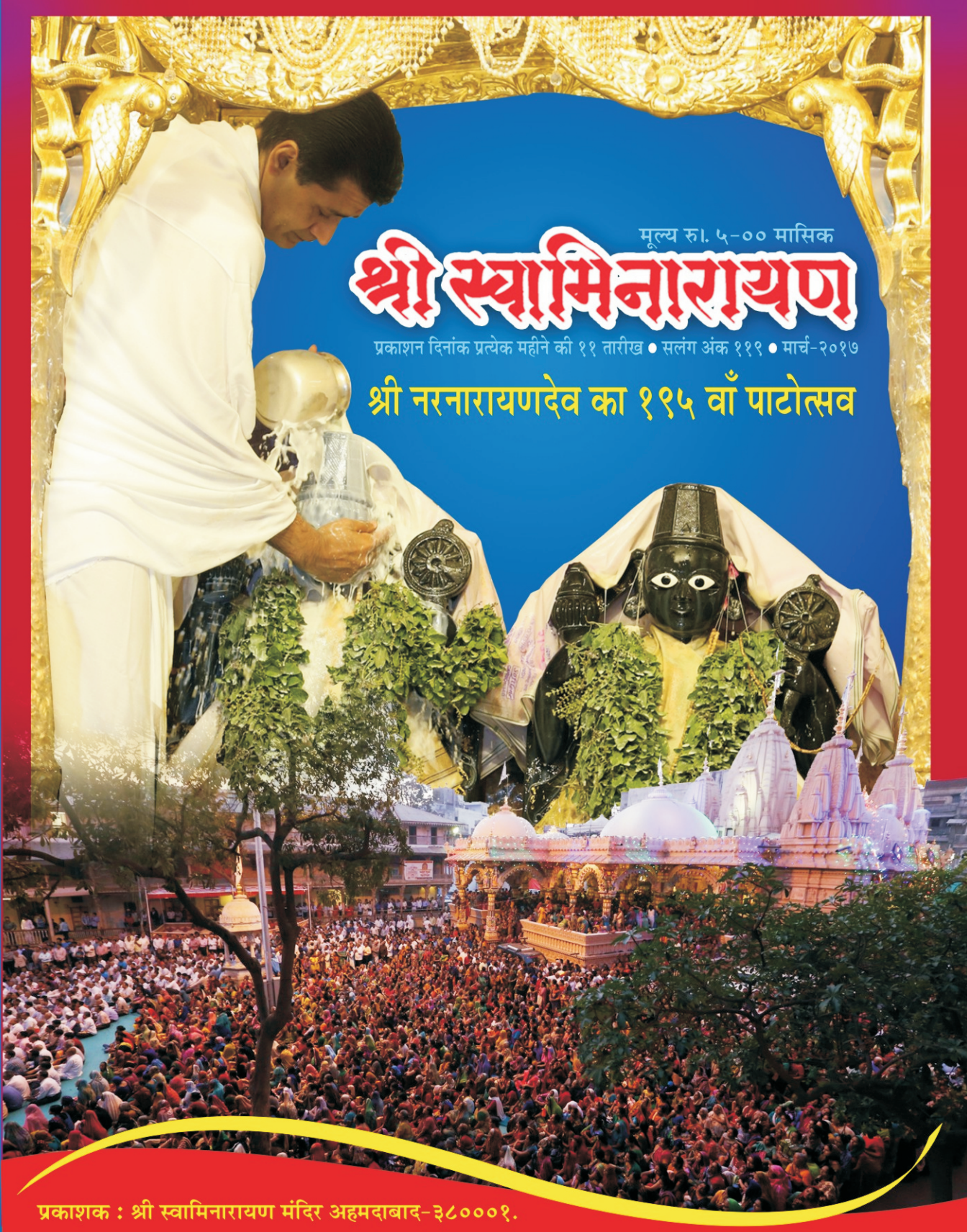

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

(१) फाल्गुन शुक्ल-३ को श्री नरनारायणदेव के पाटोत्सव के दिन श्री स्वामिनारायण म्युजियम का भी ६ठा वार्षिक प्रतिष्ठादिन मनाया गया, इस प्रसंग पर समूह महापूजा करते हुये प.पू. लालजी महाराजश्री तथा हरि भक्त । (२) कोटेश्वर श्री सहजानंद गुरुकुल में मूर्ति प्रतिष्ठा की आरती उतारते हुये प.पू. लालजी महाराजश्री । (३) नारायणघाट मंदिर के पाटोत्सव के अवसरपर ठाकुरजी का अभिषेक करते हुये प.पू. आचार्य महाराजश्री । (४) विहार (भाईयों के मंदिर) में पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी की अन्नकूट आरती उतारते हुये प.पू. महाराजश्री । (५) छपैया में श्री स्वामिनारायण म्युजियम आयोजित पारायण प्रसंग पर कथामृत पान करावते हुए स.गु. शा.स्वा. निर्गुणदासजी और अहमदाबाद से पधारे हुए स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी आदि संत ।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १० ● अंक : ११९

मार्च-२०१७

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	पाटोत्सव	०६
०४.	सुमधुमर मूर्तिना दर्शन आपो	०८
०५.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	११
०६.	सत्संग बालवाटिका	१३
०७.	भक्ति सुधा	१५
०८.	सत्संग समाचार	२१

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत
स्वामी)

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

अस्मदीयम्

आ देहे करीने भगवानना धाममां निवास करवो छे। पण वचमां क्यांय लोभावुं नथी अने कायरने ठेकाणे जे देहाभिमानी एवा भगवानना भक्त छे, तेनो तो प्रभु भज्या मां हजार जातना घाट जाय छे, जे, जो करडां वर्तमान हसे तो नहीं नभाय, ने सुगम वर्तमान एज हशे तो नभाशे। अने बडी एवो पण विचार करे जे, आवो उपाय करिये तो संसारमां पण सुखिया थइए, अने नभाशे तो हलवा हलवा सत्संगमां नभीशुं। एवो भक्त होय ते कायरने टेकाणे जाणवो अने शूरवीरने भगवानना दृढ भक्त होय तेने तो पिंड ब्रह्मांड संबंधी कोई जाननो घाट न थाय।(ग.म.-२२)

भक्तहो ! सावधान होकर सर्वोपरि भगवान श्री स्वामिनारायणमें दृढ विश्वास रखकर शुद्ध उपासना करते हुए, शरीरको पीड़ा देते हुए पंचवर्तमान का पालन करना चाहिये। जिससे पूरे ब्रह्मांड में किसी प्रकार का अपनापन न रहे और प्रत्यक्ष भगवान मिले है उन्हीं से हमारा कल्याण, मोक्ष होने वाला है यह भाव रखकर सतत मनन करते रहना है। अक्षरधाम के अलांवा किसी अन्य लोक में जाना नहीं है, यह निश्चित करके रखना चाहिये। अक्षरधाम से अधिक अन्यत्र कहीं सुख नहीं है। जन्म-मरण के फेरे में से जिन्हे छूटना हो वे उपरोक्त वचनामृत को अपने हृदय में अवश्य उतारें। जिससे महाराज हमें बड़ी सरलता के साथ अपने धाम में लेजांय।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

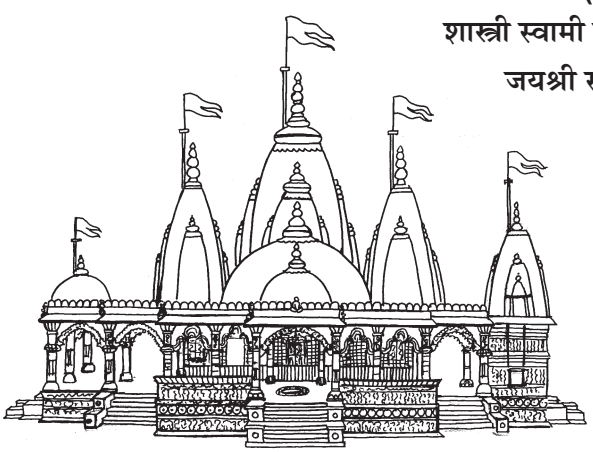

श्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(फरवरी-२०१७)

१ श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली वसंत पंचमी पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

२ श्री स्वामिनारायण मंदिर उवारसद पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

३ श्री स्वामिनारायण मंदिर गवाडा तथा सांकापुरा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

४ श्री स्वामिनारायण मंदिर टोरडा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

६ श्री स्वामिनारायण मंदिर नारणपुरा पाटोत्सव प्रसंग पर तथा वहाँ से एप्रोच बापूनगर प.भ. रमेशभाई के यहाँ पदार्पण ।

७ संत दीक्षा विधिअपने वरद् हाथों से संपन्न किये ।
श्री स्वामिनारायण मंदिर मोखासण पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

९ सूर्यनगर (ता. हलवद मूली देश) श्री स्वामिनारायण मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।

१० श्री स्वामिनारायण मंदिर अंजलि वासणा दशाब्दी पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

११ कुहा श्री स्वामिनारायण मंदिर शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

१२ श्री स्वामिनारायण मंदिर महेसाणा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

१३-१४ श्री स्वामिनारायण मंदिर भुज शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

१५ नारायणघाट श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

१६-१७ श्री स्वामिनारायण मंदिर मोरबी दशाब्दी पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

१८ श्री स्वामिनारायण मंदिर भाउपुरा तथा विहार पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण .

१९ श्री स्वामिनारायण मंदिर गुलाबपुरा शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

२० से २५ अमेरिका के धर्म प्रवास पर पदार्पण ।

२६ से २८ श्री स्वामिनारायण मंदिर भुज (कच्छ) श्रीहरि कृष्ण महाराज के १५० वें पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(फरवरी-२०१७)

१ श्री स्वामिनारायण मंदिर मूलीधाम वसंत पंचमी का उत्सव तथा श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज का अभिषेक, रंगोत्सव अपने वरद् हाथो से संपन्न किये ।

५ श्री स्वामिनारायण मंदिर अंजली (अम.) दशाब्दी पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

१२ श्री स्वामिनारायण मंदिर मोरबी दशाब्दी पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

१९ श्री स्वामिनारायण मंदिर माणेकपुर (पाटीदार) कथा प्रसंग पर पदार्पण ।

२७-२८ श्री स्वामिनारायण मंदिर भुज (कच्छ) श्रीहरिकृष्ण महाराज के १५० वें पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

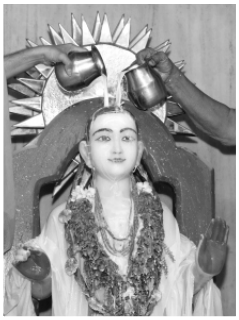

पाटोत्सव

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास
(जेतलपुरधाम)

अपने संप्रदाय में प्रत्येक सत्संगी को भगवान के पाटोत्सव का आनंद वारंवार मिलता रहता है। उस में भी अपनी शक्ति तथा भक्ति के अनुसार पूजन-अर्चन-सेवा-दर्शन का लाभ मिलता रहता है । उत्सव में पूरे वर्ष पाटोत्सव का शब्द सुनने को मिलता है। कोई वार्षिक, कोई पंच वार्षिक, रजत, सुवर्ण, अमृत, शतवार्षिक, सार्ध शताब्दि शतामृत इत्यादि पाटोत्सव का अर्थ किया जाता है । अर्थात् जिस दिन भगवान के अर्चारुप को प्रतिष्ठित किया जाता है, उस वार्षिक तिथि दिन-समय-इत्यादि को पुष्टि मार्ग, वैष्णव परंपरा में पाटोत्सव का महत्व कहा गया है। अन्य दिन की अपेक्षा पाटोत्सव के दिन की गई भजन-भक्ति अनंत फल को देने वाला है।

भगवान की प्रादुर्भाव तिथि भी पाटोत्सव के दिन मनाई जा सकती है। अर्थात् श्रीहरिने शिक्षापत्री में १५५ वें श्लोक में ऐसा कहा है कि गृहस्थी सत्संगी को भगवान के मंदिर में बड़ा उत्सव करना चाहिये। पाटोत्सव को तीन स्थानो पर करने का विधान है।

(१) घर मंदिर में अर्थात् घर में जिस दिन भगवान की सेवा को पुष्ट किया गया हो अथवा प्रतिष्ठित किया गया हो।

(२) स्वयं के गाँव में हरि मंदिर की जिस दिन प्रतिष्ठा हुई हो।

(३) महा मंदिर (शिखरी मंदिर) जहाँ पर नित्य षोडशोपचार से पूजन होता हो, श्रृंगार होता हो पांच प्रकार की आरती होती हो, उनकी प्रतिष्ठाविधिके दिन किस मंदिर में किसप्रकार की सेवा विधिकरनी इसकी आज्ञा संप्रदाय के आचार्य महाराजश्री की तरफ से होती है । सेवाविधि, नैवेद्य विधि, श्रृंगार विधि, आचार्यश्री के वचन के अनुसार आश्रितो को करना है, जो प्रणालिका वैष्णवाचार्य की रीति के अनुसार करने का विधान है। इसलिये आचार्य महाराजश्री घर मंदिर में मूर्ति की सेवा-पूजा संक्षेप में करने के लिये देशकाल के अनुसार आज्ञा प्रदान करते हैं । इसी तरह हरि मंदिर में इससे विशेष पूजा का प्रकार सेवा-आरती इत्यादि करने की आज्ञा देते हैं । इसी तरह महा मंदिरों में साङ्गोपांग शास्त्रोक्त विधिपूजा करने की आज्ञा प्रदान करते हैं । सेवा-पूजा-अनुमति-वचन-आज्ञा देने की विधी मात्र आचार्यश्री को है ऐसा वैष्णव सेवा में कहा गया है। यदि सेवक सेवा में असमर्थ हो जाय तो सेवा को वापस लेकर मुमुक्षु को धर्म संकट से मुक्त किया जाता है । शिक्षापत्री श्लोक १३० में मंदिरो की सेवा विधिका संपूर्ण अधिकार धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री के लिये कहा गया है। पाटोत्सव का शास्त्रीय अर्थ है - पट - उत्सव, हिन्दी में पाटोत्सव कहा जाता है। गुजराती में अपभ्रंश होकर पाटोत्सव बोला जाता है। सच्चा शब्द पाटोत्सव है। पट्ट अर्थात् वस्त्र वस्त्र संबंधी उत्सव अर्थात् पट्टोत्सव, वस्त्र प्रतीक है।

वल्लभपुष्टि प्रकाश नामक ग्रन्थ में पट्टोत्सव के विषय में श्रीवल्लभ संप्रदाय पुष्टि मार्गीय सातो घर के सेवा विधिका निरुपण गोस्वामी श्रीमद् देवकीनंदन आचार्य महाराजश्रीने संग्रहीत करके प्रकाशित किया है । जिस में पाटोत्सव की सेवा पूजा-अर्चन-भोग-श्रृंगार-वस्त्र-अलंकार इत्यादि को ऋतु-मास-नक्षत्र-तिथि-वार के अनुसार ठाकुरजी की सेवा करने का विधान है। वल्लभ मतानुसार व्रतः उत्सव मनाने की आज्ञा है।

उत्सव की पहचान उत्सव की शोभा, महत्व, उत्सव के प्रति सद्भावन,ा प्रेमलक्षणा भक्ति, प्रीति, समर्पण का भाव, बाल स्वरुप को श्रृंगार प्रिय है।

श्रृंगार में वस्त्र की प्रधानता होती है, वस्त्र को प्रधान रखकर ठाकुरजी को अलंकृत किया जाता है, इसी लिये इसे पट्टोत्सव अर्थात् पाटोत्सव कहा जाता है। वल्लभ पुष्टि प्रकाश के अनुसार प्रत्येक तिथि में अलग-अलग वस्त्रो से अलंकृत किया जाता है। परंतु वस्त्र के

अभाव में पाटोत्सव के दिन श्री विग्रह स्वरुप ठाकुरजी को केशरी वस्त्र से अलंकृत किया जाता है। घर मंदिर में केशरीवस्त्र के प्रतीक रुप में केशरी रुमाल अर्पण किया जाता है। केशरी ध्वजा अर्पण किया जाता है। महा मंदिर में केशरी जरीवाला वस्त्र धारण करवाया जाता है। यह वस्त्र पाटोत्सव के दिन धारणक रना चाहिये। विशेष पट्ट बंधन मस्तक पर किया जाने से अर्थात् साफा बांधने से पट्टाभिषेक भी कहा जाता है।

पट्ट (वस्त्र) षोडशोपचार पूजन का एक मात्र है। इस लिये हरि मंदिर, महामंदिर के पाटोत्सव में षोडशोपचार पूजन करना अर्चास्वरुप के लिये आवश्यक है। पाटोत्सव के दिन पंचामृत से अभिषेक प्रति वर्ष पाटोत्सव के दिन किया जाता है। आचार्यश्री की आज्ञा से पाटोत्सव के दिन राजभोग में मिश्रीका भोग, दूधसे बने पदार्थ का भोग, सखडीभोग अर्थात् तलकर जो बनाया जाय उसका भोग भगवान को लगाया जाता है। जिस स्वरुप की सेवा के लिये आचार्यश्री द्वारा विग्रह मिला हो उसका भी पाटोत्सव करना चाहिये लेकिन महाराजश्री से आज्ञा लेकर। तभी सेवा में अधिकार मिलेगा। अन्यथा देव उसकी पूजा को स्वीकार नहीं करते। नित्य सेवा की आज्ञा एकवार मिल गई होतो उसे आजीवन करनी चाहिये। परंतु पाटोत्सव की विशेष पूजा अनुमति के आधीन है। हरि मंदिर के पाटोत्सव में लालजी के स्वरुप का अभिषेक करना हो तथा स्वरुप का अभाव हो तो सोपारी में आवाहन करके पंचामृत से अभिषेक करना चाहिये। इसी तरह घर मंदिर में स्वरुप के अभाव में सेवा पुष्टि स्थापना के दिन सोपारी में आवाहन करके पंचामृत से अभिषेक करना चाहिये। जेतपुर में रामानंद स्वामीने श्री सहजानंद स्वामी को उद्धव संप्रदाय की गादी जब दी तब केशरी वस्त्र अर्पण करके पूजा की थी, उसी समय से शास्त्रो में पट्टाभिषेक उत्सव कहा जाता है।

अपने संप्रदाय के धर्मवंशी आचार्य परंपरा में भी जब गादी दीजाती है तब अनुगामी को पट्ट (वस्त्र) तथा पगडी अर्पण करने की विधिकरके सत्ता (अधिकार) दी जाती है। पट्ट तथा पगडी अर्पण करने से सम्पूर्ण सत्ता दे दी गई ऐसा शास्त्र का वचन है।

नित्य पूजा में केशरी डुपट्टा, जगन्नाथ मंदिर के आश्रितों को शिष्यत्व के अधिकार के लिये केशरी पट्टा, विश्व विद्यालय में डिग्री देने के समय विशेष प्रकार का पोषाक (वस्त्र) दिया जाता है - देने वाला तथा लेने वाला विशेष प्रकार के वस्त्र से सज्ज होता है। पट्ट दान अधिकार कर वाचक है।

भगवान का पाटोत्सव न किया जाय तो ''श्रीमद् भागवत के एकादश वें स्कंध'' में सेवा दोष कहा गया है। इसलिये कर्तव्य पारायण विवेकी जन अपने सामर्त्थ के अनुसार पाटोत्सव अवश्य करें। पाटोत्सव के समय वाद्य यंत्र - गीतादिक भी करें। अपने आचार्य महाराजश्री के कन्धे पर डुपट्टा तथा पगडी पाटोत्सव का ही प्रतीक है।

जो मनुष्य भगवान का पाटोत्सव कराता है उसके पहले की सात पीढी तथा पीछे की सात पीढी अर्थात् १४ पीढी का उद्धार हो जाता है। ऐसा पुराणों में लिखा है। द्रोपदी ने भगवान श्रीकृष्ण को एक वस्त्र (पट्ट) अर्पण किया तो जब दुःशासन लाज लूटने के लिये वस्त्र खींचा तो ९९९ साडी भगवान उसे वापस देकर उसकी लज्जा बचाई।

हजारो काम छोड़कर भगवान के पाटोत्सव के समय अवश्य जाना चाहिये। दर्शन करना भी पाटोत्सव का एक भाग है। पाटोत्सव में सेवा करने का लाभ मिलता है। पाटोत्सव में आमंत्रण की अपेक्षा नहीं रखनी चाहिये। भगवान हमारे हैं इसलिये जाना ही है।

संतो की पूजा में वस्त्र ओढाया जाता है। अपने संप्रदाय मं धोती ओढाने की परंपरा है। अर्थात् वस्त्र से सन्मान पूर्ण सन्मान कहा जाता है। किसी विशिष्ट व्यक्ति का प्रसंगानुसार अपना किसी सफलता अथवा किसी कार्य विशेष में उसे सन्मानित किया जाता है। तब शाल ओढाकर सन्मानित किया जाता है। इन सभी परंपरा में पट्ट(वस्त्र) एक विशिष्ट सन्मान की पहचान वर्षो पुरानी परंपरा पट्ट के साथ जुडी हुई है।

सुमधुर मूर्ति का दर्शन आपो

- शा. स्वा. निर्गुणदासजी (अमदावाद)

गुर्जररागे एकतालीताले गीयते ॥

एहि दयालो हृदय शयालो दर्शन सुमधुरमूर्तिम् ।
प्रशमय तापं विदलय पापं जनय हृदयसुखपूर्तिम् ॥ध्रुवपदम्॥
सुखकरशीले जलधरनीले हसितमुखे त्वयि याते ।
ताम्यति चेतो वीक्षणहेतोः कृतिरियमतिविषमाते ॥एहि. १॥
चरणसमीपे शुभमतिदीपे सुखयसि खलु जनजातम् ।
स्मर तव दासं दूरनिवासं कुरु पुरुविरहविधातं ॥एहि. २॥
जगनुकुले मंगलमूले त्वयि चिरयति दृशिदाने ।
नहि मम स्नाने न च जलपाने रुचिररपि न निधाने ॥एहि. ३॥
जनसुखकारी भवभयहारी त्वमसि विषयविषपाती ।
मा विपरीतो भव सुप्रीतो रमण चरण दृशिदाता ॥एहि. ४॥
वचन विगितं चरितमधीतं मम बहुतरमपराधम् ।
मा कुरु भावे करुणाहावे शीलमेव निजमगाधम् ॥एहि. ५॥
पश्यमपूर्ण त्यजसि हि तूर्ण का बत तव परिपाटी ।
त्वयि सुखपुरे निवसति दूरे प्रपतति कलिमलघाटी ॥एहि. ६॥
बोधितमंदं सहजानन्दं शासितशामनभटधावम् ।
प्रोज्ज्य भवन्तं भुवि विलसन्तं न गतिरतितनावम् ॥एहि. ७॥
गतसुखलेशे कुमतिनगेशे कुरु करूणां चरणसम्बम् ।
विरहविहीनं कुरु तव दीनं किमिति करोषि विलम्बम् ॥एहि. ८॥
॥ इति दीनानाथभट्टविरचितविरहाष्टपदी ॥

सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण मनुष्य देह धारण करके गुजरात कच्छ तथा काठीयावाड के गाँवो में विचरण करते हुये अपने प्रभाव से ऐश्वर्य से मुमुक्षु जीवात्माओं को अपनी तरफ आकर्षिक कर रहे थे . सभी लोगों को ऐसा लगने लगा था कि इन्दी प्रगट ब्रह्म का दृढता पूर्वक आश्रय करना चाहिये । उसी सयम महा विद्वान पंडित दीनानाथ भट्ट महाराज को मिलत हैं । वे संस्कृत के बड़े अच्छे विद्वान ही नहीं थे बल्कि आशुकवी भी थे । ऐसे विद्वान पंडित दीनानाथ भट्टने भगवान को अपने दिव्य स्वरुप में दर्शन के लिये गद् गद् भाव से स्तुति करने लगे । इसका कारण यह था कि उनके हृदय में श्री स्वामिनारायण भगवान ने शिक्षापत्री में मयाराम भट्ट का नाम लिया जबकि स्वयं को उनसे श्रेष्ठ - ज्येष्ठ मानते थे कि इस भाव को आने से राग-द्वेष से रहित होने के लिये इस प्रकार की स्तुति किये -

एहि - हे परमेश्वर इस पृथ्वी पर आप जैसा इस समय कोई स्तुति करने लायक नहीं है । हे दयालो - अत्यन्तदयावाले, हृदय - करुणा से परिपूर्ण अन्तःकरण वाले, ऐसे हे शयालो - दया- करुणा करने में विशाल हृदय वाले । दर्शय - दर्शन दीजिये । सुमधुर मूर्तिम् - आपकी ऐसी मधुर मूर्ति है कि जिसके दर्शन के विना कोई रह नहीं सकता । प्रशमयतापम् - दर्शन देकर तीनो प्रकार के ताप कानाश करो । जनय - मेरे हृदय में सद् विचारों को उत्पन्न करो । हृदय सुख पूर्तिम् - मेरे हृदय में आध्यात्मिक सुख प्रदान करो । ध्रुवपदम् - अचल पंक्ति अर्थात् टेक इस कडी को प्रत्येक कडी के बाद में बोलना है और अर्थ का अनुसन्धान रखना है ।

सुखकरशीले जलधरनीले हसितमुखे त्वयि याते ।
ताम्यति चेतो वीक्षणहेतोः कृतिरियमतिविषमाते ॥एहि. १॥

<u>सुखकरशीले</u> - हे प्रभु ! आप का स्वभाव ही

सुखप्रदान करने वाला है। जलधरनीले - आप जलघर अर्थात् पानी से भरे हुये बादल की रतह नील वर्ण के हैं जैसे बादल वरसात करके सभी को संतुष्ट कर देता है वैसे आपकी मुखाकृति सभी को संतुष्ट करनेवाली है। हसित मुखे - मंद हास करते हुए मुख से सभी को सुख प्रदान करने वाले । त्वयिपाते - आपके आने को जानकर, ताम्यतिचेतो - चित्त अनायास ही आपके दर्शन के लिये बाहर निकलने लगता है। वीक्षण हेतोः - आपके दर्शन में ही जिसका ध्येय है। कृतिरियमतिविषमाते - हे प्रभु ! वस इतना ही करना है कि केवल आपका दर्शन ही करना है तो इतना विलम्ब क्यों कर रहे हैं। हे प्रभो ! तत्काल दर्शन दो ।

चरणसमीपे शुभमतिदीपे सुखयसि खलु जनजातम्।
स्मर तव दासं दूरनिवासं कुरु पुरुविरहविधातं ।।एहि. २।।

चरणसमीपे - हे प्रभु ! आपके चरण के समीप में जो भी आता है वह कभी दुःखी नहीं रहता। शुभमति दीपे - जिसके मन में शुभ भावना हो, जिसकी बुद्धि में शुभ भावना हो वहीं आपकी शरण में आता है। सुखयसि - वह बड़ी सरलता से सुख प्राप्त कर लेता है। खलुः सत्य ही है। जनजातम् - पृथ्वी ऊपर जो भी आया है दर्शन मिलते ही सुखी हो जाता है। स्मर - हे प्रभु आप स्मरण करें। तव दासम - अपने अनन्याश्रित दास को, दूर निवासम् - आपसे दूर होकर आपका भक्त रहता है, कुरु - उसके विरहरुपी दुःख को पुरु विरह विधातम् - वियोग रुपी दुःख का नास करके उसके मनोरथ को पूर्ण करो।

जगनुकूले मंगलमूले त्वयि चिरयति द्वशिदाने।
नहि मम स्नाने न च जलपाने रुचिरपि न निधाने ।।एहि. ३।।

जगनुकुले - हे परमेश्वर ! आपकी जब कृपा होती है तब सारा जग अनुकुल हो जाता है। बाद में भक्त को कोई चिंता नहीं रहती। मंगलमूले - जगत में जितने भी मंगलकार्य है उन सभी के मूल में आप ही हैं। त्वयिचिरयति - हे प्रभु ! आप दयालु होकर भी दर्शन देने में इतना विलम्ब क्यों करते हैं। दृशिदाने - अपने भक्तों को दर्शन देने का आप ही का प्रण है। इसलिये हे भगवन् जल्दी दर्शन दीजिये। नहिमम स्नाने - जब तक आपका दर्शन नहीं होता तब तक प्रातः जाग कर स्नान करने का भी मन नहीं करता । नचजलपाने - और जलपान करने में भी रुचि नहीं होती। रुचिरपिन निधाने - दूसरा और क्या कहना, हे प्रभु ! आपके दर्शन किये विना तो इस दुःखदायक संसार से मरने की भी इच्छा नहीं होती।

जनसुखकारी भवभयहारी त्वमसि विषयविषपाती।
मा विपरीतो भव सुप्रीतो रमण चरण द्दशिदाता ।।एहि. ४।।

जुनसुखकारी - जगत में तथा शास्त्रों में तो आपकी प्रसिद्धि जीव मात्र को सुख देने वाली है। इसलिये हमें दर्शन देकर सुखी करो। भवभयहारी - जीव को जन्म - मृत्यु के महान् दुःख को दूर करने वाले हैं। त्वमसि - आप एकमात्र हैं दुःख को दूर करने वाले। विषयविषपाता - हे प्रभु ! तो आप क्यों मुझ से वियोग रुपी विषका पान करा रहे हो ? पांच विषयों के सुख आपके भक्तों के लिये विष के समान है। मा - न करो, विपरीतो भव - अपने दिये हुये वचन से विपरीत मत बनो । अर्थात् अपने दर्शन देने से वियुक्त मत करो । सुप्रीतो - आपका प्रेम तो श्रेष्ठ है। फिर क्यों आप तड़पा रहे हैं। रमण - आपका चरित्र - आप की लीलायें चरण - आपके निर्भय चरण कमल का दर्शन हो ऐसी दया करो। दृशिदाता - हे प्रभु, आप अपने दर्शन का दान करने वाले हैं।

वचन विगीतं चरितमधीतं मम बहुतरमपराधम्।
मा कुरु भावे करुणाहावे शीलमेव निजमगाधम् ।।एहि. ५।।

वचन - आपकी आज्ञा का पालन करने में क्या असमर्थ पड़ा हूँ। विगितम् - आपकी आज्ञा के पालन में या समझने में भूल हुई होगी। चरित्रमधीतम् - आपके चरित्र का अध्ययन किया हूँ, इससे मुझे समझ में आया कि जो आपकी आज्ञा का पालन नहीं करते उन्हें आपका दर्शन नहीं होता। मम - सम्भवतः यह मेरा अपराधहो कि मैं आपकी आज्ञा का भंग किया हूँ। बहुतरमपराधम् - इस तरह तो हमारे बहुत अपराधहै लेकिन आप तो दयालु है इसलिये सभी अपराधको क्षमा करके दर्शन दो। माकुरु - मत करो। भावे - आपके भक्त की भावना सच्ची है। करुणाहावे - आपके हृदय में करुणाका भाव अधिक है। शीलमेव - आपका चरित्र भी ऐसा ही है कि आप सभी के ऊपर दया ही करते हो। निजमगाधम् - यह आका आगाधवचन है, इसलिये अपनी सुमधुर मूर्ति का दर्शन दीजिये।

पश्यमपूर्णं त्यजसि हि तूर्णं का बत तव परिपाटी।
त्वयि सुखपूरे निवसति दूरे प्रपतति कलिमलघाटी ।।एहि. ६।।

पश्यमपूर्णम् - हे प्रभु ! आप तो दयालु हैं तो आप इस अपने दास के अपराधको बिना देखे त्याग क्यों कर दिये। त्यजसिहितूर्णम् - क्या तत्काल त्याग कर देना आपका स्वभाव है ? का बत तव परिपाटी - क्या इस तरह परित्याग करने की आपकी कोई परंपरा है। त्वयि - आप तो, सुखपूरे - जहाँ अनेक प्रकार का सुख हैं वहाँ आप निवास करते हैं। निवसतिदूरे - आप से दूर रहने वाले आपके भक्तों को महान दुःख का सामना करना पड़ता है। प्रपतति - आपके वियोग में आप के भक्त संसार के दुःख में गिर जाते हैं। कलिमलघाटी - महान कलिकाल के अधर्मो में फंसकर दुःख भोगते हैं।

बोधितमंदं सहजानन्दं शासितशामनभटधावम्।
प्रोज्झय भवन्तं भुवि विलसन्तं न गतिरतितनावम् ।।एहि. ७।।

बोधितमन्दम् - इस जगत में मन्दबुद्धि के जीवों को उपदेश देकर सद्बुद्धि देते हैं। सहजानन्दम् - जीवनमात्र को सहज में सुख देने सहजानंद ऐसे आप अपने नाम को सार्थक करें और मेरे दुःख को दूर करके दर्शन का आनंद दीजिये। शासित शामनभटधावम् - आपकी शरण में आये हुये अपने भक्तों के ऊपर शासन करो। अर्थात् उनकी रक्षा करो। प्रोज्झिभवन्तम् - संपूर्ण विश्व में आप ही ज्ञेय हैं, जानने योग्य है, जिसके ज्ञान से जीवात्मा को मोक्ष की प्राप्ति होती है। भुविविलसन्तम् - इस जगत में प्राणीमात्र को ज्ञान देकर प्राण को टिकाने वाले हैं। नगतिरतितनावम् - सम्पूर्ण जगत के प्राणी मात्र के लिये तथा हमारे लिये आपके सिवाय और कौन है।

गतसुखलेशे कुमतिनगेशे कुरु करूणां चरणसम्बम्।
विरहविहीनं कुरु तव दीनं किमिति करोषि विलम्बम् ।।एहि. ८।।

गतसुखलेशे - हे प्रभु ! आपके दर्शन के विना मेरे जीवन में से सुख का नाश हो गया है। कुमतिनगेशे - आपके स्वरुप का यथार्थरुप से न पहचानने के कारण महान कुबुद्दिरुप मुझ में हिमालय पर्वत जितना अज्ञान भरा हुआ है। कुरुकरुणाम् - आपकी दया तथा करुणा से मेरे में जो अज्ञान है उसे दूर करो। इसके अलांवा मेरे लिये दूसरा कोई मार्ग नहीं है। चरण सम्बम् - इस लिये जगत में आया हूँ। विरहविहीमम् - इसलिये हे प्रभु ! आप आपना दर्शन देकर अपने विरह से दूरकर दीजिये। कुरु - करो। तवदीनम् - आपका शरणागत भक्त दीनानाथ भट्ट किमिति - किस कारण से, करोषि विलम्बम् - इतना लम्बा समय दर्शन देने में विलम्ब कर रहे हैं।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

अपने म्युजियम को ६ वर्ष पूरा हो गया । ६ वर्ष पूर्व जो वृक्ष लगाये गये थे वे घटादार हो गये हैं । ६ वर्ष की ऋतुओं के बदलाव को सहन करके आज भी म्युजियम की दीवालें वैसी की वैसी (नई) लगती हैं । प्रत्येक वर्ष कीतरह इस वर्ष भी फाल्गुन शुक्ल-३ को श्रीनरनारायण देव के पाटोत्सव के दिन म्युजियम का वार्षिकोत्सव भी म्युजियम के प्रांगण में मनाया गया । दोपहर तीन बजे करीब १५० जितने यजमान दंपती म्युजियम के मुख्यहाल में अर्थात् ८ नं. के होल में महापूजा के लिये एक साथ आसन पर आसीत हुये थे । समग्र धर्मकुल की उपस्थिति में दो घन्टे महापूजा चली जिसका दिव्य लाभ सभी यजमानोने लिया था । बाद में १२ नं. के होल में अनुशासित ढंग से एक छोटी सभा में योग्य सन्मान किया गया था । इसके बाद नवनिर्मित ए.सी. होल में सभी संत प्रसाद ग्रहण किये थे । जिस का दर्शन करके करीब ३००० जितने हरिभक्त भी प्रसाद ग्रहण किये थे । इसके बाद सभी वहाँ से आत्मीयजनो से मिलने के लिये अलग हुये थे । अपने म्युजियम मेंअपने भीतर जो प्रस्फुरित होता है वही श्री स्वामिनारायण भगवान की प्रागट्य भूमि छपैयामें भी दृष्टिगोचर होता है । श्री स्वामिनारायण भगवान की प्रसादी की वस्तुओं का स्पंदन तथा उनके प्रसाद की वस्तुओं का स्पंदन एक समान आभासित होता है । इस तरह का संबंधछपैया की भूमि एवं म्युजियम में प्रतीत होता रहता है ।

अपने म्युजियम में प्रति रविवार को सायंकाल शा. स्वामी निर्गुणदासजी द्वारा वचनामृत की कथा होती है । जिस कथा का रसपान करने के लिये प्रतिदिन हरिभक्त आते है । अपने म्युजियम द्वारा छपैया में सत्संगिजीवन पारायण का आयोजन किया गया था । करीब ५०० जितने हरिभक्त गुजरात से ट्रेन द्वारा छपैया पहुंचे थे । वहाँ कथा में आने वाले सभी प्रसंग जैसे श्री घनश्याम जन्मोत्सव, गादी अभिषेक तथा मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग तथा छपैया के बाल स्वरुप घनश्याम महाराज का अभिषेक अन्नकूट इत्यादि कार्यक्रम बड़े धूमधाम से मनाये गेय थे । प.भ. श्री रतीभाई खीमजीभाई पटेल कथा के यजमान पद का लाभ लिये थे ।

- प्रफुल खरसाणी

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि-फरवरी-१७

रु। २१,०००/-	धर्मेन्द्रभाई भाईलालभाई पटेल - सोला रोड, अमदावाद।
रु। ११,०००/-	डॉ. अरविंदभाई पटेल - डेट्रोईट।
रु। १०,०००/-	मुक्ताबहन अमृतलाल पटेल (डांगरवावाली) - राणीप।
रु। ५,०००/-	मीनाबहन के. जोषी - बोपल, अमदावाद।
रु। ५,०००/-	शेलत एस. परिवार, अमदावाद।
रु। ५,०००/-	शयाना शेलत परिवार, अमदावाद।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति के अभिषेक की नामावलि - फरवरी-१७

ता. ०१-०२-२०१७	जनकबहन प्रवीणभाई पटेल - सोजीत्रावाला, वर्तमान में नवा वाडज।
१०-०२-२०१७	(प्रातः) अ.नि. सेंधालाल करशनभाई पटेल - बोपल कृते अरविंदभाई पटेल
	(११ बजे) श्री रतीलाल जयरामभाई देसाई - नरोडा
१४-०२-२०१७	श्री अल्पेशभाई रतीलाल पटेल - यु.एस.ए.
२०-०२-२०१७	श्री परेशभाई भाईलालभाई पटेल - यु.एस.ए. - कृते भाईलालभाई पटेल।
२२-०२-२०१७	विनस वालजी पिंडोरीया - लंडन कृते वनराज भगत।
२५-०२-२०१७	(प्रातः) शारदाबहन चुनीभाई पटेल - पंडोलीवाला - यु.के. कृते शैलेषभाई तथा दीपेशभाई।
	(प्रातः) डॉ. जी.के. पटेल - महेसाणा - कृते कुसुमबहन तथा ब्रिजेशकुमार - यु.एस.ए.।
	(दोपहर) उषाबहन मुकेशकुमार पटेल - जूना वाडज - कृते रविन्द्र कनुभाई पटेल।
२६-०२-२०१७	(प्रातः) श्री भरतभाई रमणभाई पटेल - मोखासणवाला - यु.एस.ए.।
	(११ बजे) रोकनभाई विष्णुभाई पटेल - मोखासणवाला - यु.एस.ए.।

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. बड़े महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला २० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा। महाभिषेक लिखाने के लिए संपर्क कीजिए।

म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६

www.swaminarayanmuseum.org/com • email:swaminarayanmuseum@gmail.com

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

भगवान भावना के भूखे हैं

(शास्त्री हरिप्रियदासजी, गांधीनगर)

बहुत ध्यान से वांचने लायक बात है । मनुष्य की जिन्दगी दो वस्तु से सुशोभित होती है । प्रथम भाव दूसरा विवेक । अन्य थोडा कम भी होता तो चलता है । लेकिन दो सद्गुण तो आवश्यक हैं । भाव तथा विवेक में से भक्तिमार्ग के लिये भाव की आवश्यकता है । जिस में भाव नहीं हो विवेक भी न हो उसे अबुधकहा गया है ।

संसार में कई जगह पर भाव चलता है । जैसे किसी का भाई अधिकारी हो, कलक्टकर हो, जिसका नाम चलता हो, ऐसा कोई बड़ा आदमी हो उसके पास जब हम जाते हैं तब बडे विवेक से बोलना पडता है । विवेक के साथ व्हार करना पडता है, विवेक पूर्वक बैठना पडता है । ऐसे अधिकारी के छोटे पुत्र को पद की कोई गरिमा नहीं रहती । वह आकर गोंद में बैठ जाता है । क्योंकि उसमें भाव की प्रधानता है । उसे कोई तकलीफ नहीं होती । उसके मन में यह होता है कि मेरे पिताजी कोई बड़े अधिकारी हैं । उसके मन एक ही भाव रहता है कि ए मेरे पिताजी हैं । और पिता को रहता है कि यह मेरा बेटा है । यहाँ पर भाव चलता है ।

कहीं विवेक चलता है । घर में एकाएक पांच लोग एक साथ आजांय । जय स्वामिनारायण कहकर खड़े हो जांय, तो मन में होगा कि अब एक लीटर दूधतो जानेवाले हैं, फिर भी उस समय आपका विवेक आगे आयेगा और कहेंगे कि आइये, आइये, बहुत अच्छा हुआ, बहुत दिनों के बाद आइये बैठिये । जब दो दिन के बाद जाते है, तब घर के लोग क्या कहते हैं कि इस बार आप अकेले आये दूसरी बार काकी को लेकर आइयेगा । मन में तो होता है कि ए कैसे जांय ? हनुमानजी की कृपा कि आप यहाँ से गये । फिर भी विवेक का व्यवहार तो करना पडता है कि इस बार अकेले आये लेकिन दूसरी बार अकेले नहीं आइयेगा । काकी को, बेटा को, सभी को लेकर आइयेगा यहाँ बगीचा बहुत अच्छा है । सभी को मजा आयेगी । यह सदा विवेक बोलता है । अन्दर के भाव से नहीं । घर के बाहर पैर पोछने वाले पर वेलकम लिखा रहता है । कितने लोग सुस्वागतम् लिखते है, कोई दिवाली में इनसे सुशोभित करते हैं । ये सभी शब्द विवेक-व्यवहार में लिये जाते हैं । कोई अनजान व्यक्ति आपका दरवाजा खटखटाता है, तुरंत कहा जाता है क्या काम है ? आप लिखे हैं न, कि भले पधारे, इसलिये आये हैं । आपके लिये नहीं लिखे हैं, यह सुन्दर लगने के लिये लिखे हैं । तुम्हें बुलाने के लिये नहीं लिखे । यह सभी विवेक संसार में, व्यवहार में सुशोभित होता है । भाव हो या न हो तो भी विवेक से गाडी चलती रहती है । लेकिन भक्ति मार्ग में विवेक की बहुत आवश्यकता नहीं है ।

सत्संग में भाव से आना । जैसे बालक अपने पिता के मोटे अधिकारी होने पर भी गोंद में जाकर बैठ जाता है उसी तरह यहाँ कथा में, दर्शन में, भजन में, भगवान में, संत में भाव होना चाहिये कि हमारी आत्मा के सगे हैं । उनके बड़े पन को नहीं देखना । हमारे ही हैं ऐसा भाव सत्संग में शोभता है ।

जिस तरह भोजन में दो वस्तु हो-केला और मूली । मूली तीखी लगती है, केला मीठा होता है । फिर भी चीनी या नमक नहीं डाला जाता । यहाँ विवेक की आवश्यकता है । लेकिन भक्ति में भाव मिलाया जाता है । भाव हो तो भक्ति मीठी लगती है । आप की चाहे जितनी भी भूल हो लेकिन भाव हो तो भगवान भूल को माफ कर देते है । कडवा वचन भी मीठा लगता है यदि भाव से बोला गया हो तो ? इसलिये भजन करो, भक्ति करो, सेवा करो, सत्संग करो - सब कुछ भाव से करो ।

भाव सहित भूधरजीने भेंटी,
चरणे लागी हूँ तो लडी-लडी ॥

भाव ग्राही जनार्दनम् ।

प्रिय बाल मित्रो ! सत्संग में भाव की जीत होती है। विवेक में दिखावा नही होना चाहिये। प्रत्येक क्षेत्र में विवेक की आवश्यकता होती है, विवेक से शोभा बढ जाती है। इसी लिये कहा गयाहै कि -

''विवेकः दशमो निधिः''

●

"भक्त में शूरवीरता होनी चाहिए"

- नारायण वी. जानी (गांधीनगर)

वात सतयुग की हो या कलियुग की - बात दोनो में एक जैसी ही है। वह है शूरवीरता। सच्चा शूरवीर ही काम कर सकता है। ढीला पोचा काम नही कर सकता है। जीवन में कोई भी वात हो, कोई भी कार्य हो लेकिन शूरवीरता के विना कुछ भी संभव नहीं है। ब्रह्मानंद स्वामी इसीलिये लिखते है कि ''हरिनो मारग छे शूरानो'' ढीला पोचा आदमी भक्ति भी नहीं कर सकता। भक्ति करनी हो और यह विचार करे कि कौन क्या कहेगा ? ऐसा कैसे हो सकता है ? ..... ऐसे कमजोर आदमी की भक्ति मार्ग में जरुरत नहीं है, इस में तो अपने इष्टदेव में समर्पित भाव हो कुर्वान कर देने की तमन्ना हो तो ही भक्ति सुशोभित होगी। बात है कोटेश्वर साबरमती नदी के किनारे बसे हुये गाँव कोटेश्वर की, वहाँ पर कोटेश्वर महादेव का बहुत बड़ा मंदिर है। यह मंदिर किसी शूरवीर भक्त कीगाथा गाता हुआ खड़ा है। इस गांव का भक्त जो शूरवीर था उसका नाम था ''झवेर''। जैसा नाम वैसा गुण। उसके देखने से लगता कि साक्षात् अलंकार का दर्शन हो रहा हो। एकवार संत विचरण करते हुए साबरमती के किनारे रुके। रात्रि में भजन किये, कीर्तन गाये, कथा किये, ध्रुव-प्रदलाद इत्यादि के आख्यान सुनाये। इष्टदेव श्रीहरि के प्रगटपना का स्मरण कराकर धन्य हो गये। साधु-संत कुछ दिन तक वहाँ रुके। प्रतिदिन सुंदर वात करते। गाँव के बहुत सारे लोग इस कथा में आते जिसमें जवेर का जीवनतो संतो कीवाणी को सुनकर बदल ही गया। सभी पर उपदेश का असर त्वरित नहीं पडता। जगत में अच्छी वस्तु की असर कम पडती है। लेकिन खराब वस्तु की असर जल्दी पड़ जाती है। जो भक्त हो उसे कथा-वार्ता सत्संग की असर तुरंत बड जाती है।

वह जवेर भक्त पूर्व का मुमुक्षुजीव था।

उसे सत्संग की असर हुई और संतो से कंठी बंधवाई। पंचवर्तमान धारण किया। चार-पांच दिन में संत वहाँ से प्रस्थान कर गये। लेकिन जवेर भक्त में सत्संग की शक्ति भरते गये। प्रतिदिन प्रातः उठ कर जवेर साबरमती में स्नान करने जाता। रास्ते में आते जाते स्वामिनारायण - स्वामिनारायण नाम मंत्र का उच्चारण करता जाता। भजन भी गाता तो उच्चस्वर से। अब जो विघ्न संतोषी थे उनके पेट में दुःखने लगा। वे जवेर को परेशान करते और कहते कि तुम्हारा स्वामिनारायण झूठा है और तुम्हारी भक्ति भी झूठी है। शूरवीर किसका नाम ? जवेर भक्त बड़ी निर्भयता से कह देता कि स्वामिनारायण सच्चे, मेरी भक्ति भी सच्ची। वे दुष्ट लोग एकत्रित होकर निर्णय किये कि- इसकी सत्यता जाननी है - वे पूछे कि तुम्हारे स्वामिनारायण सही हैं और तूं सही है तो इस मंदिर के गुंवज के ऊपर से नीचे कूद कर सत्य सावित करो। यह सत्यता साबित हो जायेगी तो हम भी तुम्हारे जैसे भक्त बन जायेंगे।

जवेर भक्त बड़ी निडरता के साथ विना घवडाये कोटेश्वर महादेव मंदिर के उपर चढ गया। दुष्ट लोग सोचने लगे कि अब हम लोगों का काम तो हो गया। उधर जवेर भक्त भगवान का नाम लेते हुये स्वामिनारायण स्वामिनारायण की भजन करते हुये मंदिर के ऊपर से कूद पडा। इतनी ऊंचाई से कूदने वाले का एक भी अस्थिपंजर शेष नही बचता है जब कि जवेर भक्त को कोई आंच तक नहीं आई। मानो भगवान स्वामिनारायण ने उसे हाथ से उठा लिया हो। अब क्या करें दुर्जनो का मुख सदा के लिये बन्द हो गया। लेकिन अन्य जो इस दृश्य को देख रहे थे भगवान स्वामिनारायण के आश्रित हो गये।

मित्रो ! ख्याल आया ? भगवान किस की सहायता करते हैं। जो प्रभु के नाम पर अपना सर्वस्व कुर्बान कर देते हैं ऐसे शूरवीर की प्रभु रक्षा करते हैं। इसी तरह हम भी शूरवीरता को प्राप्त करें ऐसी इष्टदेव भगवान स्वामिनरायण के चरणों में प्रार्थना।

भक्तिसुधा

परम पूज्य गादीवालाश्री का सत्संग विचरण

सर्वोपरि सर्व अवतार के अवतारी इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण इस संप्रदाय की ऐसी प्रणालिका बनाई है जो यह ब्रह्मांड जब तक रहेगा तब तक चलने वाली है।

तीन गूढ संकल्पो में से आचार्य महाराजश्री का स्थान संप्रदाय में ऊँचा, श्रेष्ठ तथा अलौकिक है। अपने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री द्वारा जो जो सत्संग की प्रवृत्ति होती है वह आप सभी श्री स्वामिनारायण मासिक के माध्यम से जानते हैं। परंतु समस्त बहनों की धर्मगुरु प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री द्वारा सत्संग की प्रवृत्ति से लगभग सभी लोग जानकार हैं। अनजान कोई नहीं है। कारण यह कि श्रीहरि द्वारा बनाई गई मर्यादा में ही अपने नियम का पालन करती हैं साथ में बहनो को भी करवाती है। सन् २०११ से सन् २०१६ तक श्रीनरनारायणदेव देश के गाँवो में कुल ३१०८ सत्संग सभा आपकी उपस्थिति में हुई है, यह अविरत चालू भी है। रात-दिन विना आराम किये गर्मी, ठन्ढी, बरसात या अन्य विकट परिस्थिति में भी सत्संग का कैसे पोषण हो तथा अधिक से

अधिक मुमुक्षुजीव शरण में आवे, उनका भी सरलता से कल्याण हो, सभी सुखी हों, ऐसे पवित्र विचार से त्याग भावना के साथ लगी रहती हैं। यह विचार मात्र धर्मकुल में देखने को मिलता है अन्यत्र कहाँ मिलेगा। ऊपर के सत्संग को सभी की संख्या वर्ष के भीतर ५०० तथा ५० जितनी सभा प्रतिदिन की कही जायेगी। अपने निवास स्थान पर प.पू. लालजी महाराजश्री या पू. श्रीराजा के लिये भी समय निकालपाना बडा कठिन हो जाता है, सत्संग में सां.यो. बहनो द्वारा महिला पारायण भी यदा कदा करवाती रहती है। जिसका हिसाब इस लेख में छपा हुआ है। पू. श्रीराजा तो एकदम छोटी कही जायेंगी फिरभी उनकी अध्यक्षता में भी वालिकाओं के शिबिर का आयोजन किया जाता है। उनकी प्रवृत्ति की स्मरणिका का साथ में है। प.पू. गादीवालाजी तो प.पू. लालजी महाराजश्री तथा पू. श्रीराजा जब बहुत छोटे थे तब से प्रातः कच्छ के गाँवमे में ५००-५०० कि.मी. जाकर सत्संग की प्रवृत्ति कराती थी अपितु जब तक सम्पूर्ण उत्सव पूरा न हो जाय अन्तिम आशीर्वाद सम्पन्न होने के बाद मंत्र दीक्षा, पंच वर्तमान की विधिसम्पन्न होने के बाद रात्रि में आती थी वह इस लिये कि प.पू. लालजीमहाराजश्री तथा पू. श्रीराजा रात्रि में अकेली न रह जांय।

सत्संग की तथा धर्म की प्रवृत्ति उन्हीं के मस्तक पर है। इसलिये वह प्रवृत्ति करते रहते हैं। परंतु समाज सेवा की सुवास भी कम नहीं है। धर्मकुल में तो दयालुता, आत्मीयता, संतोषीपना, भोलापना बड़ी सरलता, शालीनता भरी पड़ी हुई है। इसलिये जब किसी गरीब को देखते हैं तो मन में करुणा का भाव उमड पडता है। जब तक उसकी मदद नहीं करते तब तक उन्हें नींद नही आती

परम पूज्य गादीवालाजी के सानिध्य में हुये शिबिर

(१) कुकरवाडा (२) बालवा (३) उनावा (४) प्रातपपुरा (४) पिपलज (६) माणेकपुर (७) मकाखाड (८) ईश्वरपुरा (९) बदपुरा (१०) माणसा (११) बापुपुरा (१२) इटादरा (१४) ईन्द्रपुरा (१४) सोजा (१५) मोखासण (१६) वसई (१७) समौ (१८) लांधणज (१९) मेऊ (२) डांगरवा (२१) डांगरवा (वांटो) (२२) वडु (२३) ओला (२४) आनंदपुरा (२५) कडी (२६) मारुसणा (२७) मोटप (२८) महेसाणा (२९) मोटेरा (३०) आदरज (३१) नांदोल (३२) वहेलाल (३३) परढोल (३४) कनीपुर (३५) लवारपुर (३६) वर्धाना मुवाडा (३७) कुबडथल (३८) कुहा (३९) कणभा (४०) नरोडा (४१) बावला (४२) कोठ (४३) काशीन्द्रा (४४) टांकिया (४५) भात (४६) बलोल (भाल) (४७) आनंदपुर (बालोल) (४८) कोटेश्वर-२ (४९) अडालज (५०) बीलिया (५१) विजापुर (५२) माणपुर (५३) पीलवाई (५४) आजोल (५५) जुंडाल (५६) दहेगाम (५७) टोरडा (५८) हिंमतनगर।

थोडे समय से अमदावाद तथा अगल-बगल के अंधजन मंडल प्रज्ञाचक्षुओं को भी अपने कालुपुर मंदिर में भोजन कराना, वस्त्र देना, दूर दूर तक वृद्धालयों में वृद्धो के लिये योग्य व्यवस्था प्रसंगानुसार पाटोत्सव या दीपावली, जन्मोत्सव प्रसंग का प्रसाद भेंजा जाता है। मकर संक्रान्ति को गरीब परिवार को अनाज वितरण किया जाता है। ऐसे परिवार उपरोक्त सेवा का प्राप्त करके इतना आनन्दित होते हैं कि जीवन में इतना कभी आनंद न मिला हो। वृद्ध तथा अनाथाश्रम के लोगो को भी जीवन में अद्‌भुत अनुभूति देखने को मिलती है इससे धर्मकुल भी प्रसन्न होकर उनके ऊपर आशीर्वाद की वर्षा करते रहते हैं। यत्र तत्र पानी का घडा, स्कूलो में बच्चो को नोटबुक, पुस्तक, कंपास तथा अन्य जरुरी चीजें दी जाती है। इस प्रकार अनेक सामाजिक प्रवृत्ति पू. गादीवालाजी के द्वारा की जाती है। धर्मकुल जो भी करता है वह प्रचार के लिये नहीं करता बल्कि उनके दादा स्वंय श्रीहरि ने जो व्यवस्था दी है वही वे संभाल रहे हैं। उन्हें किसी प्रसंशा की जरुरत नहीं है । मात्र भगवान स्वामिनारायण प्रसन्न रहें यही भाव रहता है । पीछे कई वर्षो से प्रत्येक एकादशी को कालुपुर मंदिर मं गादीवालाजी की हवेली में दोपहर में २-०० बजे से ४-०० बजे तक विशाल सत्संग सभा होती है । इस सभा में प.पू. गादीवालाजी अचूक पधारती है।

कथामृत पान करके बहने खूब आनंदित होती है। इसी बहाने सभी को हार्दिक आशीर्वाद का लाभ मिल जाता है । कार्तिक शुक्ल प्रबोधिनी एकादशी को पूरे वर्ष जो बहने सभा का लाभ लीं हो वे पूरी रात्रि जागरण धुन-कीर्तन करती है, उन्हें पुरस्कार दिया जाता है । इससे बहनो में प्रेरणा मिलती है और वे पूरे वर्ष आने में चूकती नहीं है। सां.यो. बहनो को सत्संग के लिये

कालुपुर मंदिर हवेली की सांरव्ययोगी बहनो द्वारा (महिला पारायण)

(१) बापुनगर (कर्म शक्ति) (२) बापुनगर (मंगल पांडे होल) (३) बापुनगर (निकोल) (४) राणीप मंदिर (५) छपैया (६) नांदोल (७) अडालज (८) वहेलाल (९) मकाखाण (१०) साबरमती (११) विरमगाँव (१२) धूलकोट (१३) धूलकोट (१४) बालवा (१५) गांधीनगर (१६) चराडवा (१७) कलोल (१८) लांधणज (१९) कालुपुर हवेली।

प.पू.श्री राजा के सानिध्य में बालिका शिबिर

कोटेश्वर -	२
टर्फ (स्कुल) -	२
श्री स्वामिनारायण म्युजियम- बापुनगर बालवा	१

प.पू. गादीवालाजी के सानिध्य में

अंदजन मंडल के बालकों को कालुपुर दर्शन तथा शाकोत्सव का दिव्य लाभ वृद्धाश्रम में जाकर अन्नकूट का प्रसाद वितरण । भरकुंडा (सरकारी शाला के बालकों को स्टेशनरी वितरण) दोलाराणा वासणा

गाँवो में धूमने हेतु सुदंर गाड़ी की व्यवस्था भी की गई है। जिससे बहनों का धर्म तथा मर्यादा की रक्षा हो सके। सां.यो. बहने तथा कर्मयोगी बहनें साथ में छपैयाधाम की तीन-तीन यात्रा द्वारका माघ स्नान, मूलीधाम में बहनों का शिबिर स.गु. गोपालानंद स्वामी के टोरडा की शिबिर स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी के खाण गाँव की शिबिर तथा पाटोत्सव दर्शन। इस तरह अनेकों प्रवृत्तियां चलती हैं। इससे सत्संग में जागृति आई है।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री जब से गादी पर पदारुढ हुये तब से देश-विदेश में अनेकों मंदिर का निर्माण कथा, पारायण के सिवाय समाजलक्षी तथा शैक्षणिक प्रवृत्तियां एवं अनेक छोटे बड़े महोत्सव का आयौजन उनकी अध्यक्षता में हुये हैं। इसी तरह प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के द्वारा अनेकों गाँवो की प्रवृत्ति की स्मरणिका वांचकर ख्याल आयेगा कि इतने व्यस्त जीवन में सदा प्रसन्न मुद्रा रहकर सत्संग की प्रगति कैसे हो, मंगल कैसे हो उसका विचार करती रहती हैं। श्री स्वामिनारायण बाग गौशाला में गायो कीभी इतनी

एकादशी सभा का बहनो की यात्रा प्रवास

छपैया -	३ वार
द्वारका -	माघस्नान
मूली -	शिबिर
टोरडा -	शिबिर
खाण -	पाटोत्सव दर्शन

ही देखरेख रखती हैं । मूंगा प्राणी दु:खी न हो इसका उन्हें बहुत ख्याल रहता है । वे मौन होकर सबकुछ करती हैं किसी को ख्याल भी नहीं आता । ऐसी अपनी प.पू. गादीवालाजी संप्रदाय की सत्संग की प्रवृत्ति में रची पची रहती है । परमकृपालु श्री नरनारायणदेव में निश्चय, पक्ष, नियम सभी का सदा दृढ होता रहे ऐसी उनकी संकल्पना रहती है।

आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री की प.पू. गादीवालाश्री से लेकर आज ७ वीं पीढी तक की अपनी गादीवालाजी संप्रदाय के लिये अपना जीवन समर्पित की है।

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव उनका सुंदर स्वास्थ्य रखें तथा उनके द्वारा सत्संग का खूब प्रचार प्रसाद हो ऐसी परम कृपालु परमात्माश्री स्वामिनारायण भगवान के चरणों में प्रार्थना।

सभा

भाउपुरा-१३, साकापुरा-१०, विजापुर-१०, रणछोडपुरा-१६, कुकरवाडा-८, गवाडा-१३, गेरिता-१३, पालडी व्यास-६, देलवाडा-११, पीलवाई-१४, वेडा रामनगर-५, वेडा आनंदपुरा-८, बालवा-१२, उनावा-२०, प्रातपपुरा-२५, मुबारकपुरा-१५, कालीगाँव-४०, कुडासण-२३, आदरज-१३०, जनतानगर-४३, जमीयतपुरा-८०, नारणघाट-१५०, कलोल-१०, गांधीनगर-२२५, सुधण-८०, हीरामोती-२०, ऊँझा सोसा.-८०, कोटेश्वर-२५, दहेगाँव-२०, नांदलो-२१, वहेलाल-२५, परढोल-२३, कुंडाल-१६, पलसाण-१९, महेसाणा-१५, मोटप-०१४, करनपुरा-१२, मरतोली-१२, कानपुरा-१२, कड़ी-३, साबरमती-१२०, मोटेरा-१२०, अडालज-१४०, अंबापुर-१३०, पोर-८५, जुंडला-२५, चांदखेडा-१२३, उवारसद-२३, कनीपुर-१४, लवारपुर-२५, धमीज-१४, वर्धाना मुवाडा-२०, सलकी-२, कुबडथल-१६, कुंजाड-१६, कणभा-१६, कुहा-१६, वासाणा-०, मगोडी-९, इसनपुर-११, कोठ-११, भात-११, काशीन्द्रा-६, चलोडा-६, भीमपुरा-२७, पिपलज-२९, लिंबोडा-३२, कल्याणपुरा-२४, माणेकपुर-४५, मकाकाड-३७, ईश्वरपुरा-२५, बदपुरा-२५, अंबोड-३१, बरसोडा-१०, गुनमा-१०, माणसा-७, रिद्रोल-१५, बापुपुरा-१५, गुलापबुरा-२१, इटादरा-१८, सोलैया-२२, आजोल-९, इन्द्रपुरा-२१, सोजा-४, मोखासण-१५, वसई-४, आदरज-४, चराडा-६, बीलोदरा-८, चांदीसणा-३३, नारदीपुर-७, सरढव-८, आमजा-२३, समौ-१५, रणुंज-२०, मेउ-१५, गोजरिया-५, डांगरवा-२५, करजीसण-२५, वडु-३५, आनंदपुरा-२५, टांकीया-२५, भाउपुरा-१२, ओला-१५, पानसर-८, इसंड-१५, खोरज-२, कडी-१७, देउसणा-१, मारुसणा-१३, देत्रोज-२, शीयावाडा-३, आंतरोली-१५, आंतरुसाब-२२, कढलाल-९, शिंगाली-१२, भाटेरा-८, वासणा-१, विजापुर-९, खणुसा-४, सरोडा-१, राजपुर-११ - कुल सभा ३१०८ (२०११ से २०१६ के बीच)

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से)
एकादशी सत्संग सभा प्रसंग पर कालुपुर मंदिर हवेली "मन ज्ञान से वश में होता है"
(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

मन को समझाकर शक्तिशाली बनाना है। मन का चंचल होना यह एकमात्र बहाना है। मन चंचल इसलिये है कि उसे कभी सही दिशा नहीं दिये । बन्धन तथा मोक्ष दोनो का कारण मन है। जिस तरह बंधन के लिये मन को समझाते हैं उसी तरह मोक्ष के लिये समझाना चाहिये। जिस तरह छोटा बालक हो उसे कोई कुटेव लग गई हो तो समझाकर उस कुटेव को दूर कर दिया जाता है। समझाने पर भी नहीं माने तो कडक होकर कहा जाता है। बाद में धीरे धीरे सुधर जाता है। उदाहरण के रुप में - बालक को स्कूल में पढने के लिये रखते हैं उस समय प्रथम दिन कितना रोता है । धीरे-धीरे स्कूल जाना सीख लेता है। इसी तरह अपने मन को समझाना चाहिये। शांति से जब समय मिले तब बैठकर विचार करना चाहिये कि जिसका हम चिन्तन करते हैं, व्यर्थ का विचार करते हैं वह हमारे उपयोग में ही नहीं आनेवाली है। यह विचार भविष्य में तकलीफ देने वाला है। जिस तरह सभी को यह ख्याल रहता है कि हमें क्या खाना चाहिये, कौन स्वास्थ्य के अनुकूल है, कौन प्रतिकूल है। फिर भी मनुष्य रसास्वाद में रचापचा रहता है। जब मनुष्य के अन्दर विचार चलता रहता है तो अन्य विचार नहीं रहता । जैसे अभी कथा चल रही है और मन में कोई अन्य विचार चलता हो तो दो धन्टे कथा में बैठने से क्या फायदा ? यदि यहाँ अच्छा सत्संग चलता हो और कोई आकर कहे कि आप बाहर आइये न, आप से कुछ काम है। इस में क्या उचित है और क्या नहीं इसे समझना अपना काम है ।इसमें मुख्य काम मन का है मन को रोकना जाने की प्रेरणा देना यह सब अपनी बुद्धि के ऊपर है । इसलिये सदैव मन को समझाते रहना चाहिये। यदि मन न माने तो अपना दोष समझना चाहिये। सबसे बड़ी वात तो यह है कि किसी बहाने से अपने दोष को छिपाना नहीं है। जब-जब भूल हो तब बैठकर विचार करना चाहिये। पश्चात्ताप करना चाहिये । जैसे घाव लगी हो उस पर मलहम पट्टा न करके वैसा छोड दें तो वही घाव सडजायेगी। कोई भूल हो गई हो तो उसे स्वीकार करलेना चाहिये। उस पर पश्चात्ताम करना चाहिये। फिर से भूल न हो ने का मानसिक संकल्प करना चाहिये। पश्चाताप करने से मन निर्माण होता है। यदि कोई फर्क न पडे तो समझना चाहिये कि भीतर कोई बड़ा रोग है। जैसे शरीर में कोई रोग होता है तो किसी प्रकार फर्क नहीं पड़ता, कुछ भी खाते रहिये। पित्तका रोग हो तो उसे सक्कर भी अच्छी नहीं लगती। फिर भी समकर खाना चालू रखने से पित्त का रोग नष्ट हो जाता है । इसी तरह महाराज ने जो आज्ञा पालन की वात की है वह प्रारंभ में अवश्य कडवी लगेगी बाद में आनंद दायक हो जायेगी। सत्संग एकमात्र इसकी औषधिहै। अन्तर के रोग को दूर करने का एकमात्र साधन सत्संग है। इस साधन का सहारा लेने से सभी भूल खत्म हो जायेगी और आनंद ही आनंद होगा। यदि भूल हो भी जाय तो भगवान के पास बैठकर-अपनी गल्ती का एहसास करके माफी मांगनी चाहिए। इससे अन्तःकरण पवित्र होगा, निर्मल होगा। भगवान के पास अन्तरमन से रोया जाय तो निश्चित ही उसे अन्तःकरण में आनंद की अनुभूति होगी। जिस तरह आंधी को रोका नहीं जा सकता लेकिन उपाय तो कर सकते हैं। इसी तरह ज्ञान मार्ग में विचार करना चाहिए । जगत में से विषयवासना दूर तो नही कर सकते, लेकिन प्रयत्न तो कर सकते हं .अपने लिये सभी प्रकार का वातावरण अनुकूल रहे यह आवश्यक नहीं है। महाराजने कहा है कि जीवन में दुःख तो आयेगा ही। परंतु दुःख में से निकल जाने की रीति हम बतायेंगे। स्वयं से विचार करना चाहिये कि भूतकाल में क्या गलती हुई जिससे मन में अशांति है, मुझे दुःख सहन करना पड रहा है। जब अपने से कोई खराब काम न हुआ हो अच्छे कार्य हुए तो तभी शांति मिलती है, अन्यथा उसका मन किये कार्य में लगा रहेगा। मन नो अंदर शांति होती तो नींद अच्छी आयेगी, वर्तमान, भविष्य सभी सुखमय बनेगा । सत्संग में रहर अभ्यास करते रहने से लाभ होगा । जिस तरह किसी वृक्ष को लगाकर १०० बल्टी पानी डाल देने से उस में त्वरित फल-फूल नहीं निकलता । इसी तरह लम्बे समय तक सत्संग में रहकर भूलो को सुधारने का प्रयत्न करते रहना चाहिए।

सत्संग समाचार

अहमदाबाद मंदिर में परमकृपालु श्री नरनारायणदेव का १९५ वाँ पाटोत्सव

सर्वोपरि इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान की पूर्ण कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा कालुपुर मंदिर के महंत स्वामी शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी की शुभ प्रेरणा से तथा यजमान परिवार के पूर्वाश्रम के अ.नि. पू. स.गु. स्वामी देवजीवनदासजी की पुण्य स्मृति में अ.नि. प.. महादेवभाई वेलाभाई पटेल अ.नि. हीराबा महादेवभाई पटेल परिवार के प.भ. गंगारामभाई महादेवभाई पटेल अ.सौ. वालीबहन गंगारामभाई पटेल भूवा परिवार की तरफ से परम कृपालु श्री नरनारायणदेव का १९५ वाँ पाटोत्सव धूमधाम के साथ संपन्न हुआ । इस उपलक्ष् यमें श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचाह्न पारायम ता. २५-२-१७ से १-१३-१७ तक पू. स.गु.शा.स्वा. निर्गुणदासजी के वक्तापद पर प्रातः ६-०० बजे से ८ बजे तक संपन्न हुआ । प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वाद से तथा सां.यो. मंजुबा तथा सां.यो. भारतीबा की प्रेरणा से प.भ. हीराबा सोमदास पटेल (अमेरिका) के यजमान पद पर ता. २४-२-१७ से २८-२-१७ तक पंच दिनात्मक श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचान्ह पारायण पू. स.गु.शा.स्वामी निर्गुणदासजी तथा स.गु. शा. स्वामी चैतन्यस्वरुपदासजी के वक्तापद पर प्रातः ८-१५ से १०-३० तथा सायंकाल ४-०० से ६-३० बजे तक कथा का आयोजन किया गया था । संहिता पाठ के वक्ता शा. हरि स्वामी थे ।

फाल्गुन शुक्ल-३ ता. १-३-१७ बुधवार को प्रातः ६-३० से ७-०० बजे तक श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुप के वरद हाथों से श्री नरनारायणदेवों का षोडशोपचार अभिषेक, अन्नकूट इत्यादि कार्यक्रम धूमधाम संपन्न किये गये थे । जिसका दर्शन करके हजारो भक्त धन्यता का अनुभव किये ।

बाद में प.पू. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री सभा में विराजमान हुये थे । पाटोत्सव के यजमान परिवार के प.भ. गंगाराम पटेल उनके पुत्र - दामाद - पौत्र तथा पारायण के यजमान प.भ. हीराबा सोमदासभाई पटेल परिवार के भाइयों ने समग्र धर्मकुल का पूजन-आरती तथा भेंट करके हार्दिक आशीर्वाद प्राप्त किया था । बाद में अमदावाद मंदिर के पू. महंत स्वामी तथा अनेक विद्वान संत-महंत परम कृपालु श्री नरनारायणदेव का माहात्म्य समझाये थे । अंत में प.पू. महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्रीने परम कृपालु श्री नरनारायणदेव का दृढ आश्रय, नियम, निश्चय पक्ष को दृढता से रखने की वात कहकर हार्दिक आशीर्वाद दिये थे । इस प्रसंग पर पुष्पहार से संमान के स्थान पर तुलसी का पौधा दिया गया था ।

सभा का संचालन कोठारी शा. स्वामी नारायणमुनिदासजी तथा पू. शा. रामकृष्णदासजीने किया था । सभा विश्राम के बाद प.पू. आचार्य महाराजश्री अन्नकूट की आरती करने पधारे थे ।

समग्र प्रसंग के समय ब्र. स्वामी राजेश्वरानंदजी, स्वामी हरिचरणदासजी, भंडारी जे.पी. स्वामी, को. जे.के. स्वामी ट्रस्टीश्री, योगी स्वामी, भक्ति स्वामी इत्यादि संत मंडल ने सुंदर व्यवस्था की थी । श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की सेवा प्रसंशनीय तथा प्रेरणारुप थी ।

(शा.स्वा. नारायणमुनिदासजी)

श्री स्वामिनमारायण मंदिर नारायणघाट २१ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा अ.नि.स.गु. स्वा.

देवप्रकाशदासजी की दिव्य प्रेरणा से तथा स.गु. स्वा. पी.पी. (गांधीनगर महंत) तथा महंत शा.स्वामी सिद्धेश्वरदासजी के मार्गदर्शन में प.भ. डाह्याभाई हरगोवनदास पटेल, अ.सौ. कमलाबहन नारायणभाई पटेल (माणसा परीडा) परिवार के यजमान पद पर श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट का २१ वाँ पाटोत्सव माधकृष्ण-५ ता. १५-२-१७ को धूमधाम से मनाया गया था। पाटोत्सव के अन्तर्गत ता. ११-२-१७ से ता. १५-२-१७ तक श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचाह्न रात्रि पारायण शा. स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी (गांधीनगर) के वक्तापद पर सुमधुर संगीत में संपन्न हुआ।

ता. १५-२-१७ को प्रातः ६-३० से ७-०० तक प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से ठाकुरजी का महाभिषेक वेद विधिसे संपन्न हुआ। हजारो संत हरिभक्त दर्शन करके धन्य हो गये। प्रासंगिक सभा में यजमान परिवार के भाईयोंने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन-अर्चन-आरती करके चरण में भेंट सौगात भी रखे थे। प.पू. आचार्य महाराजश्री ने उन्हे हार्दिक आशीर्वाद दिया।

संतो में पू. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, पू. शा.स्वामी पी.पी. स्वामी (गांधीनगर), पू. शा. स्वा. रामइत्यादि संतो ने भगवान की महिमा समझाई। अंत में प.पू. आचार्य महाराजश्री ने सभाजनो को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। सभा संचालन शा. दिव्यप्रकाशदासजीने किया था।

(बालस्वरुप स्वामी - नारायणघाट)

श्री स्वामिनमारायण मंदिर अंजली दशाब्दी पाटोत्सव भव्यता से मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा पू. महंत स्वामी शा. आत्मप्रकासदासजी एवं पू. शा.पी.पी. स्वामी (जेतलपुर) तथा के.पी. स्वामी (महंतश्री जेतलपुर) तथा महंत स्वा. विश्वप्रकाशदासजी के आयोजन से यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर का दशाब्दी महोत्सव धूमधाम से मनाया गया। इस महोत्सव के अन्तर्गत श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण ता. ४-२-१७ से १०-२-१७ तक शा.स्वा. भक्तिनन्दनदासजी के वक्तापद पर संपन्न हुआ। अन्य कार्यक्रमो में हनुमान चालीसा पाठ, मेडीकल केम्प, श्री कृष्ण जन्मोत्सव, रुक्मिणी विवाह ब्रह्म भोजन, वृद्धाश्रम भोजन, समूह महापूजा, योग शिबिर इत्यादि कार्यक्रम संपन्न हुए। यहाँ पर प्रथमवार महिला मंच का आयोजन किया गया था। जिसमें अ.सौ. पू. गादीवालाश्री के सानिध्य में महिला मंडल ने सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा अनेक धामो से पधारी हुई ४० जितनी सां.यो. बहनोने कथा के माध्यम से सत्संग की थी। समस्त बहनों को पू. गादीवालाजीने हार्दिक आशीर्वाद दिया था। सर्व प्रथम अहमदाबाद देश में ठाकुरजी को पुष्पाभिषेक पूज्य संतो द्वारा किया गया था। जिसका दर्शन करके सभी हरिभक्त धन्य हो गये। ता. ५-२-१७ को प.पू. लालजी महाराजश्री पधारकर सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे।

ता. १०-२-१७ को ठाकुरजी का पूजन किया गया था। प.पू. आचार्य महाराजश्रीके वरद् हाथों से ठाकरुजी का महाभिषेक किया गया। भगवान को अनेक विधअलंकारो से अलंकृत किया गया था। उत्सव के समय अनेक प्रकार के भोज्य सामग्रियों से अन्नकूट किया गया। उत्सव में १७५ से भी अधिक संत पधारे थे। प.पू. आचार्य महाराजश्री व्यासपीठ का पूजन करके आरती उतारे थे। समग्र उत्सव के यजमान प्रकाशभाई ठक्कर, चि. रवि, राजा इत्यादि परिवार ने प.पू. आचार्य महाराजश्री की आरती करके आशीर्वाद प्राप्त किया था। बाद में प.पू. आचार्य महाराजश्री ने सभी सभाजनों को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। समग्र प्रसंग में शा.स्वा. हरिप्रकाशदासजी, ब्र. के.पी. स्वामी, भानु स्वामी तथा सभा संचालन शा.स्वा. यज्ञप्रकासदासजी (शिकागो) ने किया। इसके अलांवा अंजली, कांकरिया, नारायणपुरा के युवक मंडल तथा महिला मंडल की सेवा प्रेरणारुप थी। इसके साथ ही मांडल, वढीयार प्रान्त तथा बापूनगर के भक्तोंने खड़े पैर सेवा की थी। कितने हरिभक्त तो सिद्धा सामानकी भी सेवा

किये थे । सभी धन्यवाद के पात्र हैं । अंजली मंदिर में तीसरे रविवार को सत्संग सभा होती है । अगल-बगल के हरिभक्त इसका लाभ लेने अवश्य पधारते हैं ।

(महंत स्वामी - अंजली मंदिर)

अलौकिक धाम वीजापुर श्री स्वामिनारायण मंदिर द्वितीय पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा अ.नि. महंत स्वा. देवप्रकाशदासजी नारायणघाट तथा पी.पी. स्वामी (गांधीनगर) महंत की प्रेरणा से संप्रदाय का अलौकिक धाम वीजापुर मंदिर का द्वितीय पाटोत्सव का अलौकिक धाम वीजापुर मंदिर का द्वितीय पाटोत्सव गाँव के यजमानों द्वारा ता. १२-२-१७ को धूमधाम से मनाया गया । इस प्रसंग पर श्रीमद् सत्संगिजीवन ग्रंथ की कथा स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी (गांधीनगर) के वक्ता पद पर संपन्न हुई थी । महामुक्त पू. वजीबा के स्मृति मंदिर में बहुत सारे भक्त पैदल चलकर दर्शन करने आते हैं । इस प्रसंग पर शा.स्वा. प्रेमस्वरुपदासजी, स.गु. नारायणवल्लभदासजीने प्रेरणात्मक प्रवचन किया था । संतो द्वारा ठाकुरजी का अभिषेक तथा अन्नकूट की आरती की गई थी । अगल बगल के गाँव के चौधरी समाज के हरिभक्त बड़ी श्रद्धा के साथ तन, मन, धन से सेवा करते हैं । वीजापुर के विवेकसागर स्वामी भी पधारे थे ।

(श्री न.ना.देव आश्रित समस्त सत्संग)

श्री स्वामिनमारायण मंदिर महिसा वासणा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा कांकरिया मंदिर के महंत धर्मस्वरुपदासजी की प्रेरणा से यहाँ के मंदिर में ता. २७-१-१७ से २९-१-१७ तक स्वा. माधवप्रियदासजी के वक्तापद पर ''सदगुरु आरती'' के ऊपर सुंदर कथा, रासोत्सव, तथा शाकोत्सव इत्यादि प्रसंग धूमधाम से मनाये गये थे । सभा संचालन स्वा. स्वयंप्रकाशदासजीने किया था । गाँव के हरिभक्त खूब प्रसन्न हुये थे । (शा. माधव स्वामी - कांकरिया)

श्री स्वामिनमारायण मंदिर गवाडा ३५ वाँ पाटोत्सव

श्रीहरि के चरणों से अंकित पवित्र भूमि गवाडा में १२५ वर्ष पूर्व अ.नि. स्वा. लक्ष्मीप्रसाददाजी (मारवाडी)ने तत्कालीन आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से मंदिर का निर्माण करवाया था । आज से ३४ वर्ष पूर्व अ.नि. हरिनारायणदाजी (कच्छी) ने पुनः मंदिर का निर्माण करवाकर प.पू.ध.धु. आचार्यश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के वरद् हाथों से मूर्ति प्रतिष्ठा करवायी थी । उस समय से इस गाँव की उत्तरोत्तर प्रगति हुई है ।

ता. ३-१-२०१७ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से ३५ वें वार्षिक पाटोत्सव के प्रसंग पर ठाकुरजी का अभिषेक, अन्तकूट आरती की गई थी । प्रासंगिक सभा में गांधीनगर के महंत पी.पी. स्वामी, दिव्यप्रकाश स्वामी (नारणघाट) तथा व्रजभूषण स्वामी इत्यादि संतोने श्रीहरि तथा धर्मकुल का माहात्म्य समझाया था ।

अन्त में प.पू. आचार्य महाराजश्रीने यजमान परिवार तथा सभा को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । पाटोत्सव के यजमान अ.नि. वालजीभाई बालचन्ददास पटेल कोठारी परिवार कृते परसोतमभाई, अमृतभाई, जयंतीभाई, रमेशभाई, केतनभाई थे । प.पू. आचार्य महाराजश्री के ठहरने की व्यवस्था के यजमान अ.नि. घेलाभाई नरसिंहदास पटेल कृते कानजीभाई तथा प्रदीपभाई थे ।

(शा. चैतन्यस्वरुपदासजी - गांधीनगर)

श्री स्वामिनमारायण मंदिर ईशनपुर (गांधीनगर) शाकोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा गांधीनगर से-२ मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा से ता. २४-१-१७ को इशनपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में गाँव के हरिभक्तों के सहयोग से भव्य शाकोत्सव मनाया गया था । इस प्रसंग पर कालुपुर मंदिर के पू. महंत स्वामी, शा. आनंदजीवन स्वामी, शा. छपैयाप्रसाददासजी इत्यादि संत पधारकर श्रीहरि की सर्वोपरिता पर प्रकाश डाले थे । दहेगाँव से श्री नरनारायणदेव युवक मंडनले धुन-भजन-कीर्तन का सुंदर लाभ दिया था ।

(शा. चैतन्यस्वरुपदासजी - गांधीनगर)

श्री स्वामिनमारायण मंदिर मोरवासण (भाईयों का) २७ वाँ (बहनों के मंदिरका) २६ वाँ वार्षिक पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा वडनगर मंदिर के महंत शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर मोखासण (भाइयों का) २७ वाँ पाटोत्सव तथा बहनो के श्री स्वामिनारायण मंदिर का २६ वाँ पाटोत्सव माधशुक्ल-१३ ता. ९-२-१७ को सां.यो. रेखाबहन की प्रेरणा से श्री नरनारायणदेव महिला मंडल के यजमान पद पर धूमधाम से मनाया गया था।

इस उपलक्ष्य में ता. ७-२-१७ से ता. ९-२-१७ तक स्वा. निष्कुलानंद स्वामी कृत भक्त चिंतामणी ग्रंथ की त्रिदिनात्मक कथा स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी के वक्तापद पर सम्पन्न हुई।

ता. ७-२-१७ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे, सभा में सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे। ता. ८-२-१७ को समस्त बहनों की गुरु प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी पधारी थी। कथा श्रवण करके बहनों को हार्दिक आशीर्वाद दी थी। इस अवसर पर रासगर्बा का भी आयौजन किया गया था । वडनगर के शा. विश्वप्रकाशदासजी सत्संग सभा में श्रीजी महाराज के लीला चरित्र का वर्णन किये थे। ता. ९-२-१७ को पू. महंत स्वा. हरिकृष्णदासजीने कथा की पूर्णाहुति की आरती उतारी थी । समस्त गाँव के हरिभक्तों ने तथा यजमानने सेवा करके श्रीहरि की प्रसन्नता प्राप्त की। अनेक धामों से संत पधारे थे । इस अवसर पर पाटोत्सव-अन्नकूट-धर्मकुल दर्शन कथा श्रवण इत्यादि का सभीने लाभ लिया । (को. श्री मोखासण)

श्री स्वामिनमारायण मंदिर करजीसण पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वामी शा. नारायणवल्लभदासजी की प्रेरणा से एवं को. शा.स्वा. विश्वप्रकाशदासजी की प्रेरणा से प.भ. अरविंदभाई कांतिलाल पटेल परिवार के यजमान पद पर करजीसण श्री स्वामिनारायण मंदिर का पाटोत्सव ता. २२-१-१७ को अपने प.पू. लालजी महाराजश्री के शुभ वरद् हाथों धूमधाम से संपन्न हुआ।

प्रासंगिक सभा में वडनगर मंदिर के शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी, शा.स्वा. विश्वप्रकाशदासजी तथा अनेको धामों से पधारे हुये संतोने अपनी अपनी अमृतवाणी का लाभ दिया था। अन्त में प.पू. लालजी महाराजश्रीने सभाजनों को हार्दिक आशीर्वाद देकर प्रसन्नता व्यक्त कीथी। सभी हरिभक्त-देवदर्शन, धर्मकुल दर्शन, अन्नकूट दर्शन करके महाप्रसाद ग्रहण करके धन्यता का अनुभव किये। (शा.स्वा. विश्वप्रकाशदासजी - वडनगर)

सांकापुरा मंदिर का ३२ वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनमारायण मंदिर सांकापुरा का ३२ वाँ पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया।

इस प्रसंग पर श्रीमद् सत्संगिजीवन सप्ताह पारायण शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी (एप्रोच मंदिर) के वक्ता पद पर सम्पन्न हुआ।

अंतिम दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे। सर्व प्रथम ठाकुरजी की आरती के बाद में पूर्णाहुति की आरती उतारकर सभा में विराजमान हुये थे। पाटोत्सव के मुख्य यजमान प.भ. नारणभाई गोबरभाई पटेलने प.पू. महाराजश्री का पूजन आरती करके आशीर्वाद प्राप्त किया। अंत में प.पू. महाराजश्री ने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। २००० जितने हरिभक्त अगल-बगल के गाँवो से उपस्थित होकर कथा श्रवण किये थे। यह गाँव श्रीहरि के प्रसादी का है। यहाँ पर भगवान श्री स्वामिनारायण वीजापुर से प्रांतीज होते हुये पधारे थे। यहाँ के भक्त से पीने के लिये पानी मागे लेकिन विलम्ब होता देखकर कूंये से पानी लेकर पीये थे। उस समय से यहाँ का सत्संग उत्तरोत्तर वृद्धि को प्राप्त होता रहा। (रमेश टी. पटेल - सांकापुरा)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनमारायण मंदिर मूली वसंत पंचमी का उत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. शा.स्वा. श्यामसुंदरदासजी की प्रेरणा से मूलीधाम में विराजमान श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज का १९४ वाँ पाटोत्सव माधशुक्ल-५ (वसंत पंचमी) ता. १-२-१७ को बड़ी भव्यता से मनाया गया था । पाटोत्सव के अन्तर्गत ता. २८-१-१७ से ता. १-२-१७ तक श्रीमद् सत्संगिभूषण महाग्रंथ का पंचाह्न पारायण स.गु.शा.स्वा. सूर्यप्रकाशदासजी तथा शा. स्वा. घनश्यामप्रकाशदासजी के वक्तापद पर सम्पन्न हुआ । जिस के यजमान पद का लाभ प.भ. प्राणजीवनभाई (मोरबी)ने लिया था ।

ता. १-२-१७ वसंत पंचमी को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज का षोडषोपचार से महाभिषेक किया गया था । बाद में अन्नकूट की आरती तथा हरियाग की पूर्णाहुति की गई थी ।

प्रासंगिक सभा में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया । समग्र पाटोत्सव के यजमान प.भ. भगवानजीभाई माधवजीभाई परमार (सुरत) थे । बहनो को दर्शन का सुख प्रदान करने के लिये प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी पधारी थी । अनेक धामो से सांख्ययोगी बहने भी पधारी थी । जिस में झालावाड, हालार, भाल प्रदेश के हजारो हरिभक्त भी पधारे थे । दोपहर १२-०० बजे मंदिर के विशाल प्रांगण में सुशोभित भव्य मंच के ऊपर संप्रदाय के सबसे अधिक प्राणप्यारे प.पू. लालजी महाराजश्री श्रीहरि के जैसा रंग खेलकर समग्र मूली देश के संत-हरिभक्तों को प्रसन्न कर दिया ।

समग्र सभा का सभा संचालन स्वा. भक्तिनंदनदासजीने किया । भोजनालय की व्यवस्था में को.स्वा. कृष्णवल्लभदासजी, मुकुंदप्रसाद स्वामी, अनिरुद्ध स्वामी, व्रज स्वामी, हरिकृष्ण स्वामी, जे.के. स्वामी तथा चंदू भगत थे । (शैलेन्द्रसिंह झाला)

बावली गाँव में (ता. धांगधा) सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. स्वामी भक्तिनंदनदासजी (मूली रणजीतगढ) की प्रेरणा से बावली गाँव में ता. ११-२-१७ को सत्संग का आयोजन किया गया था । जिस में हलवद-मोरबी तथा धांगधा से संत पधारकर कथा का लाभ दिये थे । हलवद की सां.यो. बहनों की सभा में शिक्षापत्री के आज्ञानुसार वर्तन करना तथा नियम-निश्चय-पक्ष को कभी छोडना नही इस पर बल दिया गया था । इस प्रसंग के यजमान गोठी परिवार के ईश्वरभाई तथा काशीरामभाई थे ।

(अनिल दूधरेजिया)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनमारायण मंदिर कोलोनिया शिक्षापत्री जयंती

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा कोलोनीया मंदिर के महंत शा.स्वामी धर्मकिशोरदासजी तथा पार्षद मूलजी भगत की प्रेरणा से अपने कोलोनिया श्री स्वामिनारायण मंदिर में माघ-५ (वसंत पंचमी) को सभा में श्री शिक्षापत्री महाग्रंथ का पूजन-अर्चन करके आरती उतारी गई थी । जिस में यजमान परिवार ने भी लाभ लिया ता । इसके साथ ही ठाकुरजी के समक्ष भव्य शाकोत्सव भी किया गया ।

संतोने शिक्षापत्री के २१२ श्लोकों का पठन किया तथा जीवन में शिक्षापत्री को उतारने की प्रेरणा भी दिये । हनुमान चालीसा का पाठ तथा जनमंगल का पाठ भी किया गया । (प्रवीण शाह)

श्री स्वामिनमारायण मंदिर ह्युस्टन में शिक्षापत्री जयंती

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से एवं महंत स्वामी नीलकंठदासजी मूली मंदिर के साधु दिव्यप्रकाशदासजी की प्रेरणा से अपने ह्युस्टन मंदिर में माद्य शुक्ल-५ वसंत पंचमी को सायंकाल ५ से ८ बजे तक शिक्षापत्री जयंती के निमित्त सभा में शिक्षापत्री का पूजन यजमान परिवार द्वारा किया गया था । साथ में २१२ श्लोको का समूह पठन भी

किया गया था । आज के प्रसंग के यजमान का सन्मान संतो द्वारा किया गया था । जनमंगल पाठ, हनुमान चालीसा के बाद ठाकुरजी का भोग तथा आरती हुई ।

(प्रवीण शाह)

श्री स्वामिनमारायण मंदिर मूलीधाम लुईवील (अमेरिका)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा मूलीधाम के संत शा. स्वा. धर्मवल्लभदासजी एवं हरिवल्लभ स्वामी की प्रेरणा से यहाँ पर सुंदर प्रवृति चलती है । यहाँ के लुइवील श्री स्वामिनारायण मंदिर में वसंत पंचमी को सभा में शिक्षापत्री का पूजन-अर्चन किया गया था । बाद में २१२ श्लोकों का पठन भी किया गया था । यजमान परिवार द्वारा ठाकुरजीके समक्ष शाकोत्सव भी किया गया था । इस में अनेकों हरिभक्त दर्शन का लाभ लिये थे । शाकोत्सव का प्रसाद सभी को दिया गया था । सभी प्रसाद ग्रहण कके प्रस्थान किये । मंदिर को रोशनी से श्रृंगारित किया गया था । युवक मंडल तथा महिला मंडल की सेवा सराहनीय थी । प्रेसिडेन्ट श्री विष्णुभाई पेटल आदि की सेवा प्रेरणारुप थी ।

(रमेश टी. पटेल)

पियोरिया (आई.एस.एस.ओ, यु.एस. चेप्टर)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की प्रेरणा से अपने पियोरीया इ.सो. यु.एस.ए. चेप्टर में हरिभक्तों द्वारा सत्संग की सुंदर प्रवृत्ति होती है । हरिभक्त मकर संक्रांति को सभा किये थे । माघ शुक्ल वसंत पंचमी को शिक्षापत्री पूजन तथा २१२ श्लोकों का समूह वांचन किया गया था । लुईवील से धर्मवल्लभ स्वामीने श्रीजी महाराज का माहात्म्य फोन द्वारा समझाया था । प्रत्येक रविवार को सत्संग सभा होती है । जिस में बालक भी लाभ लेते हैं । (रमेश पटेल)

श्री स्वामिनमारायण मंदिर लेस्टर (आई.एस.एस.ओ.) शिक्षापत्री जयंती

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री एवं प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से अपने लेस्टर श्री स्वामिनारायण मंदिर में वसंत पंचमी को ता. १-२-१७ को सभा में सभी हरिभक्त मिलकर २१२ श्लोको का पठन किया तथा शिक्षापत्री का पूजन किया । आरती भी की गई ।

ता. १०-२-१७ से १२-२-१७ तक वसंत पंचमी के निमित्त शिक्षापत्री भाष्य की त्रिदिनात्मक कथा भुज मंदिर के संतो द्वारा की गई थी ।

जिस में बहुत सारे हरिभक्त कथा श्रवण करके यजमान बनकर सुंदर लाभ लिये थे । वक्ताजी का तथा संतो का सन्मान सभी कमेटी के सदस्यो ने किया । भुज मंदिर के संत अमदावाद के धर्मकिशोरदासजी की उपस्थिति में युवा सभा का आयोजन किया गया था । शनिवार को बहनोने मंदिर में महाप्रसाद की सुंदर व्यवस्था की थी । सभी हरिभक्त देवदर्शन, कथाश्रवण तथा प्रसाद ग्रहण करके धन्य हो गये ।

(किरण भावसार, सहमंत्री लेस्टर)

मूली श्री स्वामिनमारायण मंदिर द्वारा स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी के कीर्तन की एम.पी.-३ सीडी का विमोचन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. महंत स्वामी श्यामसुंदरदासजी तथा पार्षद भरत भगत की प्रेरणा से प.भ. दिनेशभाई मगनभाई देत्रोजा (प्रतापगढवाला) की सेवा से वसंत पंचमी को स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी की जन्म जयंती के प्रसंग पर मूली श्री स्वामिनारायण मंदिर की तरफ से स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी के अलौकिक कीर्तनो की एम.पी.-३ सीडी का प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों से विधिवत विमोचन किया गया । जो मूली मंदिर के साहित्य केन्द्र में उपलब्धहै ।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।

(१) अंजली (वासणा) मंदिर के दशाब्दी पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी का अभिषेक करते हुये तथा सभा में आशीर्वाद देते हुये प.पू. आचार्य महाराजश्री ।(२) महेसाणा मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी का अभिषेक करते हुये प.पू. आचार्य महाराजश्री ।(३) प.पू. आचार्य महाराजश्री प्रेरित श्री स्वामिनारायण म्युजियम संलग्न ''प्रीजर्वेशन प्लस'' प्रोजेक्ट अन्तर्गत गेटवीक (यु.के.) मंदिर में श्री व्रजेन्द्र वाटिका के उद्घाटन प्रसंग पर स्थानिक अधिकारी तथा मंदिर के व्यवस्थापक ।(४) श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में पारायण प्रसंग पर वक्ता का पूजन करते हुये महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी तथा पोथी की आरती उतारती हुई यजमान परिवार की महिला हरिभक्त ।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/15-17 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2017

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से

श्री बाल स्वरुप घनश्याम महाराज विराजित जिर्णोध्धारित अक्षर भुवन का उद्घाटन महोत्सव

श्री घनश्याम महोत्सव

ता. ३१ मई से ४ जून २०१७

Praful Kharsani